प्रेस विज्ञप्ति

मुंशी प्रेमचंद की 145वीं जयंती के उपलक्ष्य में और विश्वविद्यालय के साथ उनके अनमोल संबंधों को श्रद्धांजलि देने के लिए जामिया ने एक विशेष प्रदर्शनी का किया आयोजन

नई दिल्ली, 11 अगस्त 2025

8 अगस्त, 2025 को, जामिया के प्रेमचंद अभिलेखागार एवं साहित्य केंद्र (जेपीएएलसी) ने मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) की 145वीं जयंती के अवसर पर अपनी विशेष प्रदर्शनी का समापन किया। मुंशी प्रेमचंद भारत के महानतम लेखकों में से एक थे और उनके नाम पर जामिया मिल्लिया इस्लामिया के प्रसिद्ध अभिलेखागार का नाम रखा गया है। प्रेमचंद ने हिंदी और उर्दू दोनों में समान धाराप्रवाह लेखन किया और जैसा कि उनके साहित्यिक संग्रह से पता चलता है, उन्होंने समाज के हाशिये पर रहने वालों को अपनी कथा के केंद्र में रखा।

प्रेमचंद अभिलेखागार, जैसा कि जेपीएएलसी को आमतौर पर कहा जाता है, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के एक सदी पुराने इतिहास के साथ-साथ मुख्य रूप से हिंदी और उर्दू में एक साहित्यिक संग्रह को भी संरक्षित करता है, जो उस सांस्कृतिक संदर्भ को उजागर करता है जिसमें जामिया ने आधुनिक दुनिया में अपनी यात्रा की। प्रेमचंद और उनके समकालीनों की रचनाएँ जेपीएएलसी की सबसे मूल्यवान कलाकृतियों में से एक हैं।

31 जुलाई, 2025 से शुरू होने वाली इस प्रदर्शनी में प्रेमचंद के पत्रों और निजी पत्रों के साथ-साथ उन पर लिखी गई पुस्तकें और शोध-प्रबंध भी प्रदर्शित किए गए। जिन पत्रिकाओं और पत्रिकाओं में उनकी साहित्यिक रचनाएँ मूल रूप से प्रकाशित हुई थीं, उन्हें भी प्रदर्शित किया गया।

एक विशेष आकर्षण प्रेमचंद के उद्धरणों वाले पोस्टरों की एक श्रृंखला थी, जिनके साथ प्रख्यात कलाकारों द्वारा लेखक के रेखाचित्र और चित्र भी थे। पूरे सप्ताह विभिन्न विभागों के शिक्षक और छात्र प्रदर्शनी देखने आए। शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में जामिया के इतिहास पर एक ओरिएंटेशन के लिए जेपीएएलसी आए छात्रों को भी प्रदर्शनी का भ्रमण कराया गया। वे जामिया और प्रेमचंद के संबंधों के बारे में जानने के लिए उत्साहित थे।

जामिया के संस्थापकों की तरह, प्रेमचंद भी स्वतंत्रता आंदोलन में गहराई से जुड़े थे। 7 नवंबर, 1932 को, उन्होंने संग्राम (एक पत्रिका जिसका वे संपादन करते थे) में एक संपादकीय लिखा, जिसमें उन्होंने जामिया के धर्मनिरपेक्ष और उपनिवेशवाद-विरोधी प्रयोग का समर्थन और प्रशंसा की। यह समर्थन उस महत्वपूर्ण मोड़ पर आया जब जामिया एक बड़े वित्तीय संकट से जूझ रहा था। 1935 में, जामिया के संपादक के अनुरोध पर, जिसे मकतबा जामिया (जामिया का प्रकाशन गृह/मुद्रणालय) ने प्रकाशित किया, प्रेमचंद ने अपनी सबसे प्रसिद्ध लघु कहानी, कफ़न, को प्रकाशन के लिए भेजा। मकतबा जामिया ने ही प्रेमचंद की कफ़न को सबसे पहले प्रकाशित किया था। 1939 में, प्रेमचंद के निधन के तीन साल बाद, मकतबा जामिया ने उनके प्रसिद्ध अंतिम उपन्यास, गोदान का उर्दू संस्करण प्रकाशित किया।

यह प्रदर्शनी जामिया मिल्लिया इस्लामिया के साथ प्रेमचंद के अनमोल संबंधों को श्रद्धांजलि थी।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी